प्रभात खबर

कहलगांव-सुलतानगंज

डाल्फिनों के संरक्षण के उपाय बतायेंगे वैज्ञानिक

प्रतिनिधि ▸ कहलगांव

- एनटीपीसी कहलगांव में पांच दिवसीय 'साउथ एशियन रीवर डॉल्फिन वर्कशॉप' आज से

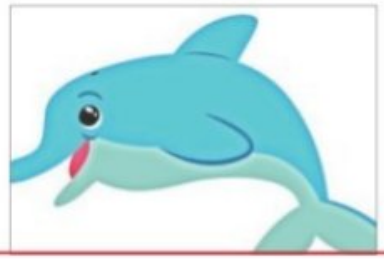

भारतीय राष्ट्रीय जलीय प्राणी के रूप में मान्यता प्राप्त गांगेय डॉल्फिन की सुरक्षा के उद्देश्य से कहलगांव के एनटीपीसी परिसर में 17 से 21 मार्च तक पांच दिवसीय 'साउथ एशियन रीवर डॉल्फिन वर्कशाप' का आयोजन किया गया है. एनटीपीसी और वाइल्डलाइफ कंजरवेशन ट्रस्ट मुंबई के सहयोग से तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा इसका आयोजन किया गया है. कार्यशाला में भारत व नेपाल के 15 युवा शोधर्थियों को गांगेय डॉल्फिन के अध्ययन एवं संरक्षण के तरीके बताये जायेंगे. विश्वविद्यालय के पीजी बॉटनी विभाग के प्रोफेसर सह गांगेय डॉल्फिन सर्वेक्षण टीम के मुखिया डॉ सुनील कुमार के संयोजन एवं शोधकर्ता शुभाशिष डे व नचिकेत केलकर के सहयोग से आयेजित इस कार्यशाला में कई वैज्ञानिक व्याख्यान देंगे.

डॉल्फिन संरक्षण विशेषज्ञ एट्री बेंगलूरु के डॉ जगदीश कृष्णा स्वामी, भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून के डॉ राशीद रजा, डॉल्फिन के आचरण व संवाद विशेषज्ञ जापान के डॉ मोरी शाका, घड़याल विशेषज्ञ बेंगलूरु के तरुण नायर तथा टीएमबीयू के प्रो डॉ सुनील कुमार चौधरी अपने–अपने विषय पर प्रकाश डालेंगे.

प्रदूषण के कारण गंगा से लुप्त हो गये कई प्राणी : डॉ रजा

डॉल्फिन संरक्षण के लिए आयोजित हो रही कार्यशाला में भाग लेने आये भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून के डॉल्फिन विशेषज्ञ डॉ राशीद रजा ने प्रभात खबर से विशेष बातचीत में बताया कि वर्तमान में गंगा नदी कई प्रकार के संरक्षण संबंधी समस्याओं से जूझ रही है. प्रदूषण और जगह–जगह बनाये गये बांधों के कारण गंगा की निर्मल व अविरल धारा प्रभावित हुई है. इस कारण गंगा में रहने वाले जैविक प्राणि जैसे डॉल्फिन, घड़ियाल, उदविलाव, कछुआ और कई प्रकार मछलियां गंभीर रूप से प्रभावित हो रही हैं. गंगा से कई प्राणि तो लुप्तप्राय हो चुके हैं. गंगा पर अश्रित रहने वाले मछुआरे आज गंगा तट छोड़कर पलायन करने को विवश हो गये हैं.